Class Notes **B.A. Geography Part-2, Paper-IV, Unit-IV**

संसाधन की संकल्पना
Concept of Resource

बोलेंद्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल,
राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान

मनुष्य के विभिन्न उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति अथवा किसी कठिनाई का निवारण करने वाले या निवारण में योग देने वाले आश्रय या स्त्रोत को संसाधन कहते हैं, अर्थात कोई भी पदार्थ या वस्तु तब तक संसाधन नहीं कहा जा सकता जब तक कि उसमें मानव की आवश्यकता पूर्ति या कठिनाई निवारण की आंशिक या पूर्ण क्षमता नहीं होती । इसप्रकार कोई वस्तु ,पदार्थ या तत्व उसी समय संसाधन माना जाता है जब उसमें मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति , कार्यसिद्धि अथवा लाभ प्रदान करने की क्षमता हो I अतः मनुष्य की क्षमता और संसाधनों में घनिष्ठ संबंध माना गया है I

संसाधन शब्द अंग्रेजी भाषा के RESOURCE शब्द का बना है जिसमें दो शब्द है I RE का मतलब पुनः या दीर्घ अवधि, SOURCE का मतलब साधन या उपाय है I दूसरे शब्दों में प्रकृति में उपलब्ध साधन जिन पर कोई जैविक समुदाय दीर्घ अवधि तक निर्भर रह सके तथा पुनर्निर्माण की क्षमता रखता है, संसाधन कहलाता है I

इस प्रकार पृथ्वी पर पाई जाने वाली कोई भी वस्तु या पदार्थ संसाधन तभी कहलाती है जब उसमें निम्नलिखित गुण हों:

1. वस्तु मानव उपयोगी हो
2. इसका रूपांतरण अधिक मूल्यवान तथा उपयोगी वस्तु के रूप में किया जाना संभव हो
3. इसमें निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति की क्षमता हो
4. इन वस्तुओं के दोहन की योग्यता रखने वाला मानव संसाधन भी उपलब्ध हो
5. संसाधनों के रूप में सतत विकास करने के लिए आवश्यक पूंजी भी हो

संसाधन की परिभाषाएं

- संसाधन का अर्थ किसे उद्देश्य की प्राप्ति करना है I यह उद्देश्य व्यक्तिगत आवश्यकताएं एवं समाजिक लक्ष्यों की पूर्ति करता है I

- संसाधन कोई ऐसी वस्तु है जो मानवीय आवश्यकताओं तथा इच्छाओं की पूर्ति करता है I
- मूलतः संसाधन न केवल पर्यावरणीय कार्यशीलता है जो मानवीय उपयोग में आती है I
- संसाधन या प्राकृतिक संसाधन प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले पदार्थ है जो किसी भी दशा में मानव के आर्थिक विकास तथा कल्याण में प्रयुक्त रहता है I पर्यावरण में संसाधनों की उपलब्धता तथा वितरण भौतिक प्रक्रिया का परिणाम है जिन पर मानव का कमोवेश नियंत्रण पाया जाता है I

इस प्रकार संसाधन मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति करने वाला एक साधन है जो पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप में पाया जाता है I

संसाधन का सृजन

संसाधन का निर्माणकर्ता या सृजनकर्ता प्रकृति है परंतु यह मानव ज्ञान द्वारा ही सृजित होता है I इसलिए मिचेल ने कहा है "मनुष्य के ज्ञान सभी संसाधनों की जननी है" या "मनुष्य का ज्ञान ही सबसे बड़ा संसाधन है I"

संसाधन की संकल्पना

संसाधन की संकल्पना विभिन्न हो सकती हैं:

1. संसाधन होते नहीं बनाए जाते हैं
2. संसाधन एक कार्यात्मक संकल्पना है
3. संसाधन एक गतिशील संकल्पना है, स्थिर नहीं
4. संसाधन प्रतिरोधों तथा तटस्थ तत्वों के साथ मिलते हैं
5. मानव के रहन-सहन का स्तर संसाधनों के उपयोग का परिणाम है
6. संसाधनों के संरक्षण की संकल्पना

1. संसाधन होते नहीं बनाए जाते हैं

प्रकृति का कोई भी तत्व अपने मूल रूप में संसाधन नहीं है लेकिन माननीय कौशल एवं कार्य कुशलता से ही उसे संसाधन बनाया जाता है I

2. संसाधन एक कार्यात्मक संकल्पना है

कोई भी प्राकृतिक तत्व माननीय उपयोग के योग्य तभी बनता है जब वह मानवीय क्रियात्मक प्रक्रियाओं से गुजरे I

3. संसाधन एक गतिशील संकल्पना है, स्थिर नहीं

कुछ संसाधन वर्तमान में अनेक प्रतिरोधों के कारण मानवीय उपयोग के योग्य नहीं है, वे ही कालांतर में संसाधन का रूप धारण कर मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम हो सकते हैं I इस प्रक्रिया में माननीय ज्ञान एवं कौशल की प्रमुख भूमिका होती है I

4. संसाधन प्रतिरोधों तथा तटस्थ तत्वों के साथ मिलते हैं

प्रकृति द्वारा प्रदत प्रतिरोधक तत्व हानिकारक होते हैं जैसे बंजर भूमि, बाढ़, भूकंप, तूफान, महामारी I इनकी प्रतिकूलता प्रतिरोधक तत्व है I इसी प्रकार शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक भावना आदि मानवीय क्षेत्र के संसाधन हैं I इनकी अनुकूलता संसाधन एवं प्रतिकूलता प्रतिरोधक होती हैं I प्रौद्योगिकी (Technology) के ज्ञान में वृद्धि करके तटस्थ एवं प्रतिरोधक तत्वों को संसाधन बनाया जा सकता है I

5. मानव के रहन-सहन का स्तर संसाधनों के उपयोग का परिणाम है

मानव के रहन-सहन का स्तर बढ़ाने या सुधारने में संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है I

6. संसाधनों के संरक्षण की संकल्पना

संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग कर उसकी प्रकृति में दीर्घकाल तक उपलब्धता बनाए रखना ही संसाधनों का संरक्षण है I

संसाधनों का वर्गीकरण

विभिन्न सर्वमान्य आधारों पर संसाधन का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है:

1. प्राकृतिक संसाधन : जैविक संसाधन
   अजैविक संसाधन
2. मानवीय संसाधन

उद्देश्य के आधार पर संसाधन तीन प्रकार के होते हैं:

1. ऊर्जा संसाधन
2. कच्चा माल : खनिज पदार्थ
   वनस्पति
   पशु
   उत्पादित पदार्थ

3. खाद्य पदार्थ : वनस्पति
पशु एवं जीव जंतु
खनिज

उपयोग की सततता पर आधारित संसाधन निम्न प्रकार के होते हैं:

1. नवीकरणीय संसाधन
2. अनवीकरणीय संसाधन
3. चक्रीय संसाधन

प्रकृति ही संसाधनों की जननी है I
जैविक संसाधन: इसके अंतर्गत प्राकृतिक रूप से वृक्षों तथा जीव जंतुओं से प्राप्त होने वाली वस्तुए सम्मिलित हैं I जैसे वन, चारागाह, घास के मैदान, जंगली जीव-जंतु, मछलियां, समुद्री जीव, जंगल से प्राप्त फल, फूल, सुपारी, जड़ी-बूटी, पत्तियां, छालें, रेशे, गोंद, रबड़, दूध, मांस, ऊन के लिए भेड़-बकरियां, चौपाया जानवर, जंगली जीव शेर, चीते, तेंदुआ, लकड़बग्घा, हाथी आदि से प्राप्त खालें, बाल, दांत, सिंह, बांध या झील या तालाब की मछलियां आदि I

अजैविक संसाधन: इसके अंतर्गत धरातल, चट्टाने, वायु, जल, मिट्टी, खनन में भवन निर्माण के पत्थर आदि I

ऊर्जा संसाधन: इनके अंतर्गत उन संसाधनों को शामिल किया जाता है कि जिनका उपयोग शक्ति के साधनों के विकास हेतु किया जाता है I शक्ति सजीव तथा निर्जीव में विभाजित किया जाता है I जीव शक्ति के साधनों में मानव एवं पशु तथा निर्जीव शक्ति के साधनों में लकड़ियां I इन दोनों के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग है जिसके अंतर्गत कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, अल्कोहल, सौर ऊर्जा, ज्वार-भाटा, पवन उर्जा, परमाणु शक्ति इत्यादि आती है I

खनिज पदार्थ: जो वस्तुएं पृथ्वी के धरातल या उनके गर्भ से खोदकर निकाली जाती है, खनिज पदार्थ कहलाते हैं I इसके अंतर्गत लौह अयस्क, कोयला, हीरा, चूना पत्थर, सोना, चांदी, बलुआ पत्थर और अन्य खनिज शामिल हैं I

वनस्पति: वनस्पति के अंतर्गत घास, झाड़ियों से लेकर विशाल वृक्ष तक आते अं I लकड़ी, रेशेदार उत्पाद गोंद, रबड़. तेल, बीज, छालें, कार्क, शैवाल आदि शामिल हैं I

पशु: पशु गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट आदि को सम्मिलित किया जाता है I in पशुओं से प्राप्त उत्पाद जैसे दूध, खाल, समूर, सींग, उन, रेशम, हड्डियां, दूध उद्योग, ऊनी वस्त्र, चमड़ा, रेशम उद्योग आदि पशुओं से प्राप्त कच्चे माल से ही होता है I

उत्पादित पदार्थ: इसके अंतर्गत रेशा (कपास, जूट, रबड़) तिलहन फसलों (सरसों, मूंगफली) आदि सूतीवस्त्र उद्योग, टायर ट्यूब उद्योग, खाद्य तेल उद्योग आदि में कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त होता है I

वनस्पति: वनस्पति में खाद्य पदार्थ के अंतर्गत कंदमूल, फल, पत्तियां, मशरूम, सब्जी आदि सम्मिलित हैं I पशु एवं जीव-जंतु के अंतर्गत पशुपालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन करते आ रहे हैं I मानव के खाद्य पदार्थ में सम्मिलित नमक का विशेष स्थान है जो खनन और समुद्री जल से प्राप्त होता है I लवण खाद्य पदार्थों में प्रयुक्त किया जाता है I

नवीकरणीय संसाधन: वैसे संसाधन जिन्हें पुनः उत्पादित किया जा सकता है I इन संसाधनों को भौतिक, यांत्रिक तथा रासायनिक प्रौद्योगिकी अपनाकर दीर्घकाल तक उपयोगी बनाया जा सकता है I जैसे जल, पवन, सौर ऊर्जा, मृदा की फसलें, वन, मानव संसाधन आदि ।

अनवीकरणीय संसाधन: इसमें वैसे संसाधन आते हैं जिनका एक बार उपयोग करने के बाद पुनः पूर्ति संभव नहीं है I इनकी मात्रा सीमित है I अतः इनका विवेकपूर्ण उपयोग किया जाना चाहिए I जैसे पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, तांबा, बॉक्साइट, यूरेनियम, कोयला आदि I

चक्रीय संसाधन: पृथ्वी पर कुछ ऐसे भी संसाधन उपलब्ध हैं जिनका उपयोग बार-बार किया जा सकता है I जैसे साल संसाधन I लोहा भी विभिन्न रूप में प्रयोग किया जा सकता है I

अधिकार के आधार पर संसाधनों का वर्गीकरण

इसके अंतर्गत संसाधनों को तीन भागों में बांटते हैं:

1. **व्यक्तिगत संसाधन**

2. **राष्ट्रीय संसाधन**: जैसे झरिया का कोयला क्षेत्र भारत, पेंनिसेल्वेनिया कोयला क्षेत्र अमेरिका का आदि I
3. **अंतरराष्ट्रीय संसाधन / सार्वभौमिक संसाधन**: जैसे सूर्य का प्रकाश, वायु आदि I

संसाधनों का संरक्षण

संसाधनों का उपयोग कब किस प्रकार होगा इसका विश्लेषण करते हुए उपयोग और समय के अनुसार निर्धारित किया जाना चाहिए क्योंकि प्रकृति द्वारा उपलब्ध संसाधन आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उपलब्ध होना चाहिए I इसके लिए हमें बुद्धिमता पूर्ण उपयोग पर बल देना चाहिए ताकि इनकी स्वतंत्रता बरकरार रहे I

इस प्रकार मनुष्य के आधारभूत आवश्यकताओं भोजन, वस्त्र, आवास की पूर्ति के लिए स्वयं या दूसरों के श्रम पर निर्भर रहना पड़ता है जो इन वस्तुओं को बना सके I ये वस्तुए या तो स्वत: ही पृथ्वी के धरातल पर या भूगर्भ में पाई जाती है अथवा इन्हें निकाल कर या उनका परिवर्धन, संशोधन अथवा परिष्करण कर मानव उपयोग के लिए तैयार किया जाता है I इसी प्रकार मनुष्य की बौद्धिक एवं सांस्कृतिक क्षमता के आधार पर ही संसाधन का स्वरूप निर्धारित होता है I इसीलिए मनुष्य की शारीरिक व बौद्धिक क्षमता, अभिरुचि, ज्ञान, संगठन, आर्थिक उन्नति, राजनीतिक स्थायित्व आदि स्वयं में संसाधन है I

****

सन्दर्भ: आर्थिक भूगोल के मूल तत्व - ज्ञानोदय प्रकाशन, आर्थिक भूगोल - SBPD प्रकाशन

****